

TYBA कोचिंग सेंटर (TYBA Coaching Center)

राजस्थान CET (12वीं व स्नातक स्तर) दैनिक 6:00 AM मास्टर नोट्स श्रृंखला | Day 2 Release

विषय: राजस्थान कला एवं संस्कृति (भाग-1 : परिचय एवं सांस्कृतिक विरासत)

अध्याय 1: सांस्कृतिक धरोहर, यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, दुर्ग एवं संग्रहालय

हेल्पलाइन: 6367029449

★ TYBA 6-चरणीय शिक्षण मॉडल: 'कहानी, कब, कहाँ, क्यों, कैसे और सीख'

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (RSMSSB) की CET परीक्षा में कला एवं संस्कृति से सबसे ज्यादा 15-20 प्रश्न पूछे जाते हैं। इन नोट्स में यूनेस्को के सभी विश्व धरोहर स्थलों, 6 पहाड़ी दुर्गों, जंतर-मंतर, जयपुर परकोटा, हवेलियों, बावड़ियों और प्रमुख संग्रहालयों को 100% द्विभाषी (समानांतर अंग्रेजी व सरल बोलचाल हिंदी) में विश्लेषित किया गया है।

1. राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत एवं विविधता (Cultural Heritage & Diversity)

1.1 पृष्ठभूमि एवं कहानी का सार (Cultural Narrative & Overview)

The Resilient Soul of the Desert: Rajasthan is not merely a land of arid sands; it is a living tapestry where stark geographical adversity gave birth to an explosion of vibrant colors, chivalric fortitude, and architectural brilliance. When the scorching Thar desert offered minimal vegetation, the people saturated their lives with dazzling leheriyas, bandhej, and tie-dye patterns. When foreign invaders incessantly crossed the northwestern frontiers, the warrior clans sculpted invincible stone bastions on rugged mountain ridges. From the rhythmic twirls of Ghoomar to the celestial astronomy of Jantar Mantar, Rajasthan's cultural heritage reflects humanity's triumph of creative expression over geographic harshness.

मरुधरा की अदम्य सांस्कृतिक आत्मा की कहानी: राजस्थान सिर्फ धोरे और रेत का प्रदेश नहीं है; यह एक ऐसा जीवंत सांस्कृतिक रंगमंच है जहाँ प्रकृति की कठोरता ने सतरंगी रंगों, वीरता और स्थापत्य कला के बेजोड़ नमूनों को जन्म दिया। जब तपते हुए रेगिस्तान में पेड़-पौधों की हरियाली कम थी, तो यहाँ के लोगों ने अपनी वेशभूषा में चटक लाल, पीले और केसरिया लहरिये व बंधेज के रंग भर दिए। जब उत्तर-पश्चिमी सीमाओं से आक्रांताओं के हमले हुए, तो यहाँ के शूरवीरों ने अरावली की दुर्गम पहाड़ियों पर अभेद्य किले खड़े कर दिए। घूमर की लचक से लेकर जंतर-मंतर की खगोलीय गणनाओं तक, राजस्थान की संस्कृति इस बात का जीवंत प्रमाण है कि कैसे मनुष्य ने कठिन भौगोलिक परिस्थितियों को अपनी कला से स्वर्ग बना दिया।

1.2 कब हुआ? (Timeline of Cultural Heritage Evolution)

Chronological Evolution of Cultural Landmarks:

- Pre-Historic to Early Historic Era (3rd Century BCE - 6th Century CE):** Maurya period structural Buddhist stupa at Bairat; Gupta period temple architecture and early stone sculpting.
- Gurjara-Pratihara & Maha-Maru Era (8th - 11th Century CE):** Development of the Maha-Maru temple architectural style at Osian (Jodhpur), Abhaneri (Dausa), and Kiradu (Barmer).
- Medieval Fortification Era (12th - 16th Century CE):** Construction of Rajasthan's colossal hill forts—Chittorgarh renovations, Kumbhalgarh (1448-58 by Kumbha), Mehrangarh (1459 by Rao Jodha), Junagarh (1589-94 by Rai Singh).
- Late Medieval Astronomical & Town Planning Era (1727 - 1734 CE):** Maharaja Sawai Jai Singh II founded Jaipur (18 Nov 1727, grid planning by Vidyadhar Bhattacharya) and built Jantar Mantar (1728-1734 CE).
- Modern Global Recognition Era (1985 - 2019 CE):** UNESCO inscriptions: Keoladeo (1985), Jantar Mantar (2010), Kalbelia Dance (2010), 6 Hill Forts (2013), and Jaipur Walled City (2019).

सांस्कृतिक पड़ावों का कालक्रम:

- प्रागैतिहासिक से प्रारंभिक ऐतिहासिक काल (तीसरी सदी ई.पू. - छठी सदी ई.):** बैराठ का मौर्यकालीन गोल बौद्ध मंदिर, गुप्तकालीन मंदिर स्थापत्य और प्रस्तर मूर्तियां।
- गुर्जर-प्रतिहार एवं महा-मारु शैली काल (8वीं से 11वीं सदी):** ओसियां (जोधपुर), आभानेरी (दौसा) और किराड़ू (बाड़मेर) में महा-मारु मंदिर निर्माण शैली का चरमोत्कर्ष।

- **मध्यकालीन गिरि दुर्ग काल (12वीं से 16वीं सदी):** अरावली की चोटियों पर विशाल किलों का निर्माण—चित्तौड़ का विस्तार, कुंभलगढ़ (1448-58 में कुंभा द्वारा), मेहरानगढ़ (1459 में राव जोधा द्वारा), और जूनागढ़ (1589-94 में रायसिंह द्वारा)।
- **खगोलीय एवं नगर नियोजन काल (1727 - 1734 ई.):** सवाई जयसिंह द्वितीय ने 18 नवम्बर 1727 को विद्याधर भट्टाचार्य के नक्शे पर जयपुर की नींव रखी और 1728-34 में जंतर-मंतर वेधशाला बनाई।
- **वैश्विक धरोहर काल (1985 - 2019 ई.):** यूनेस्को द्वारा केवलादेव (1985), जंतर-मंतर (2010), कालबेलिया नृत्य (2010), 6 पहाड़ी दुर्ग (2013), और जयपुर परकोटा शहर (2019) का विश्व धरोहर सूची में शामिल होना।

1.3 कहाँ हुआ? (Geographical Distribution of Cultural Zones)

सांस्कृतिक अंचल (Zone)	प्रमुख जिले व क्षेत्र	विशिष्ट सांस्कृतिक, भाषाई एवं स्थापत्य पहचान
मेवाड़ अंचल (Mewar)	उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, भीलवाड़ा	शौर्य और बलिदान की भूमि। चित्तौड़ व कुंभलगढ़ दुर्ग, पिछोला-फतेहसागर झीलें, फड़ चित्रकला (शाहपुरा), थेवा कला, गैर नृत्य।
मारवाड़ अंचल (Marwar)	जोधपुर, पाली, बाड़मेर, नागौर, जालोर	रेगिस्तानी लोक संस्कृति। मेहरानगढ़ दुर्ग, मांड गायिकी, लंगा-मांगणियार परंपरा, उम्मेद भवन, रावणहत्था, ढोल नृत्य (जालोर)।
ढूंढाड़ अंचल (Dhundhar)	जयपुर, दौसा, टोंक, कोटपूतली	नगर नियोजन, आमेर दुर्ग, नाहरगढ़, जयगढ़, हवामहल, जंतर-मंतर, ब्लू पॉटरी, सांगानेरी-बगरू प्रिंट, ढूंढाड़ी बोली।
हाड़ौती अंचल (Hadoti)	कोटा, बूंदी, झालावाड़, बारां	कालीसिंध-आहू नदियों का गागरोन जल दुर्ग, बूंदी की 84 खंभों की छतरी व चित्रशाला, रानीजी की बावड़ी, कजली तीज।
शेखावाटी अंचल (Shekhawati)	सीकर, झुंझुनूं, चूरू, नीम का थाना	'ओपन आर्ट गैलरी' (खुली कला दीर्घा)। नवलगढ़, मंडावा, फतेहपुर की भित्तिचित्रों (Fresco Paintings) से सजी भव्य हवेलियां, गीदड़ व चंग नृत्य।
वागड़ अंचल (Vagad)	डूंगरपुर, बांसवाड़ा	आदिवासी भील-गरासिया संस्कृति, बेणेश्वर धाम का त्रिवेणी संगम (आदिवासियों का महाकुंभ), वागड़ी बोली, सोम-कमला-अंबा।

1.4 क्यों हुआ? (Geographic & Strategic Determinants of Culture)

Why Rajasthan's Cultural Landscape Took Shape:

- **Geographic Determinism:** The arid expanse necessitated water conservation, giving rise to monumental Stepwells (Baoris), Kunds, and Tankas as artistic masterpieces rather than mere utility tanks.
- **Defense and Geo-Strategy:** As the overland gateway to Delhi and Gujarat's oceanic ports, Rajasthan stood in the direct path of military campaigns. Kings engineered Hill Forts (Giri Durg) with multi-tiered ramparts, hidden escape tunnels, and self-contained water reservoirs to endure months-long sieges.
- **Merchant Patronage:** Wealthy Marwari traders operating along the historic Silk and spice routes channeled their commercial fortunes into adorning private residences (Havelis) with gold-leaf frescoes, carved jharokhas, and courtyard fountains.

राजस्थान की विशिष्ट संस्कृति के उदय के कारण:

- **भौगोलिक परिस्थितियां एवं जल संकट:** पानी की एक-एक बूंद को सहेजने की मजबूरी ने कलात्मक **बावड़ियाँ (Stepwells)**, कुंडों और टांकों को जन्म दिया, जो केवल पानी के स्रोत नहीं बल्कि स्थापत्य कला के बेजोड़ नमूने बने।
- **सामरिक सुरक्षा व युद्ध की अनिवार्यता:** दिल्ली और गुजरात के व्यापारिक बंदरगाहों के रास्ते पर स्थित होने के कारण राजस्थान लगातार युद्धों का साक्षी रहा। राजाओं ने महीनों चलने वाले घेरों का सामना करने के लिए अरावली की चोटियों पर **गिरि दुर्ग** बनाए, जिनमें विशाल अन्न भंडार और तालाब थे।
- **व्यापारिक समृद्धि व हवेलियों का वैभव:** देश-विदेश में व्यापार करने वाले मारवाड़ी सेठों ने अपनी अथाह संपत्ति से शेखावाटी में ऐसी नक्काशीदार **हवेलियां (Havelis)** बनवाईं, जिन पर सोने और प्राकृतिक रंगों से भित्तिचित्र उकेरे गए।

1.5 कैसे हुआ? (Architectural Engineering & Cultural Mechanisms)

Architectural Engineering & Cultural Synthesis:

- **Indigenous Hill Fort Engineering:** Utilized natural cliff contours as primary defensive perimeters without artificial footings (e.g. Gagron rests directly on stone ridges between rivers Ahu and Kalisindh).

Kumbhalgarh's 36-km wall incorporates curved bastions to eliminate blind spots for archers and cannon gunners.

- **Astronomical Masonry of Jantar Mantar:** Sawai Jai Singh II erected stone instruments (Vrihat Samrat Yantra—world's largest stone sundial, measuring time to 2 seconds accuracy) using local marble and sandstone rather than fragile brass tools.
- **Fresco Buono & Fresco Secco (भित्तिचित्र कला):** Shekhawati artisans applied vegetable pigments on wet lime plaster (Ala-Geela / Arayish / Mohrakashi technique), allowing colors to permanently fuse into the stone fabric for centuries.

स्थापत्य अभियांत्रिकी और निर्माण तकनीक (कैसे बनी यह विरासत):

- **प्राकृतिक चट्टानों का उपयोग:** किलों को किसी कमजोर नींव पर नहीं, बल्कि सीधी प्राकृतिक चट्टानों पर खड़ा किया गया (जैसे गागरोन दुर्ग बिना नींव के सीधी चट्टान पर है)। कुंभलगढ़ की 36 किमी लंबी दीवार में घुमावदार बुर्ज बनाए गए ताकि तोपों और तीरों का कोई ब्लाइंड स्पॉट न रहे।
- **जंतर-मंतर की पाषाण खगोल विज्ञान तकनीक:** सवाई जयसिंह ने धातु के छोटे यंत्रों के स्थान पर विशाल चूने-पत्थर के यंत्र बनाए (जैसे बृहत् सम्राट यंत्र, जो दुनिया की सबसे बड़ी पत्थर की सूर्य घड़ी है और 2 सेकंड की शुद्धता से समय बताती है)।
- **आला-गीला एवं मोहराकशी भित्तिचित्र तकनीक:** शेखावाटी के कारीगरों ने गीले चूने के प्लास्टर पर प्राकृतिक रंगों से चित्र उकेरे, जिससे रंग पत्थर का ही हिस्सा बन गए और सदियों बाद भी धूप-बारिश में फीके नहीं पड़े।

1.6 इससे हमें क्या सीखने को मिलता है? (Pedagogical Takeaway & Exam Tips)

Moral Lessons & CET Examination Strategy:

- **Timeless Lesson:** Traditional Rajasthani architecture proves that sustainable living, rainwater harvesting, and aesthetic brilliance can thrive symbiotically even in harsh semi-arid climates.
- **RSMSSB CET High-Yield Traps:**
 - **Hill Forts Trick:** Remember trick "चीकू गाजर आम" (ची = चित्तौड़गढ़, कू = कुंभलगढ़, गा = गागरोन, ज = जैसलमेर/सोनारगढ़, र = रणथंभौर, आम = आमेर). Mehrangarh and Taragarh are NOT in UNESCO's 6 Hill Forts list!
 - **UNESCO Year Trap:** Keoladeo (1985), Jantar Mantar & Kalbelia (2010), 6 Hill Forts (2013), Jaipur Walled City (2019).
 - **Stepwell Distinctions:** Chand Baori is at Abhaneri (Dausa); Raniji ki Baori (Queen of Stepwells) is at Bundi.

विद्यार्थी के लिए सीख एवं CET परीक्षा के मुख्य ट्रैप:

- **जीवन की सीख:** राजस्थान का पारंपरिक स्थापत्य सिखाता है कि सीमित संसाधनों और जल संकट में भी वर्षा जल संचयन और टिकाऊ निर्माण से जीवन को भव्य व समृद्ध बनाया जा सकता है।
- **CET परीक्षा के 3 सबसे बड़े कन्फ्यूजन (ट्रैप):**
 - यूनेस्को दुर्ग ट्रिक: याद रखें "चीकू गाजर आम" (ची = चित्तौड़गढ़, कू = कुंभलगढ़, गा = गागरोन, ज = जैसलमेर, र = रणथंभौर, आम = आमेर)। ध्यान रहे: मेहरानगढ़ और तारागढ़ यूनेस्को सूची में शामिल नहीं हैं!
 - यूनेस्को वर्ष क्रम: केवलादेव (1985), जंतर-मंतर व कालबेलिया नृत्य (2010), 6 पहाड़ी दुर्ग (2013), जयपुर परकोटा शहर (2019)।
 - बावड़ियों का कन्फ्यूजन: चांद बावड़ी आभानेरी (दौसा) में है, जबकि बावड़ियों का सिरमौर 'रानीजी की बावड़ी' बूंदी में है।

2. राजस्थान के यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (UNESCO World Heritage Sites)

2.1 यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में राजस्थान की पूर्ण तालिका

धरोहर स्थल (Heritage Site)	स्थान / जिला	घोषणा वर्ष (Year)	यूनेस्को सत्र एवं प्रमुख विशेषताएं
केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (Keoladeo)	भरतपुर	1985	राजस्थान का प्रथम यूनेस्को स्थल (प्राकृतिक श्रेणी)। साइबेरियन क्रेन की शीतकालीन शरणस्थली, रामसर वेटलैंड साइट (1981)।
जंतर-मंतर वेधशाला (Jantar Mantar)	जयपुर	2010 (34वां सत्र)	सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा 1728-34 में निर्मित। विश्व का सबसे बड़ा पाषाण सूर्य यंत्र (सम्राट यंत्र)। कुल 19 खगोलीय यंत्र।
कालबेलिया लोक नृत्य एवं गीत	राजस्थान (सपेरा जाति)	2010	यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर (Intangible Cultural Heritage) में शामिल। प्रमुख नृत्यांगना: गुलाबो सपेरा।
राजस्थान के 6 पहाड़ी दुर्ग (Hill Forts)	चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, गागरोन, आमेर, जैसलमेर	2013 (37वां सत्र, नोम पेन्ह, कंबोडिया)	राजपूत गिरि दुर्ग स्थापत्य, जल संरक्षण प्रणालियां, और ऐतिहासिक जौहर-साका स्थलों के कारण सम्मिलित। (ट्रिक: 'चीकू गाजर आम')।
जयपुर परकोटा शहर (Walled City)	जयपुर	2019 (43वां सत्र, बाकू, अज़रबैजान)	वैदिक वास्तुशास्त्र और नौ-चौकड़ी ग्रिड पैटर्न पर नियोजित भारत का प्रथम योजनाबद्ध गुलाबी शहर। परकोटे में 7 मुख्य दरवाजे (पोल)।

2.2 राजस्थान के 6 यूनेस्को पहाड़ी दुर्गों का तुलनात्मक अध्ययन

दुर्ग का नाम	जिला व पहाड़ी	प्रमुख स्थापत्य व जल संचयन संरचनाएं	ऐतिहासिक साके एवं विशिष्ट तथ्य
चित्तौड़गढ़ (Chittorgarh)	चित्तौड़गढ़ (मेसा पठार)	विजय स्तम्भ (कुंभा), कीर्ति स्तम्भ, पद्मिनी महल, गौमुख कुंड, कुंभश्याम मंदिर, 7 प्रवेश द्वार (पाडन पोल से राम पोल)।	3 साके (1303, 1534, 1568)। राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय (Living) दुर्ग। गंभीरी व बेड़च संगम।
कुंभलगढ़ (Kumbhalgarh)	राजसमंद (जरगा पहाड़ी)	36 किमी लंबी सुरक्षा दीवार, कटारगढ़ दुर्ग (मेवाड़ की आंख), बादल महल, जालीबाव बावड़ी, मामादेव कुंड। शिल्पी: मंडन।	महाराणा प्रताप का जन्म (9 मई 1540)। कुंभा की हत्या मामादेव कुंड के पास। मेवाड़ के महाराणाओं की संकटकालीन शरणस्थली।
रणथंभौर (Ranthambore)	सवाई माधोपुर (7 पहाड़ियां)	त्रिनेत्र गणेश मंदिर, 32 खंभों की छतरी (न्याय की छतरी), सुपारी महल (मंदिर-मस्जिद-चर्च संगम), पदमला तालाब।	1301 ई. में हम्मीर देव का साका व रानी रंगादेवी का राजस्थान का प्रथम जल जौहर। अबुल फजल: 'यह बख्तरबंद दुर्ग है'।
गागरोन दुर्ग (Gagron)	झालावाड़ (आहू-कालीसिंध संगम)	बिना नींव सीधी चट्टान पर खड़ा जल दुर्ग (औदक दुर्ग), संत पीपा की समाधि, सूफी संत मीठे शाह की दरगाह, जौहर कुंड।	1423 ई. में अचलदास खींची का साका (होशंगशाह के विरुद्ध)। 'अचलदास खींची री वचनिका' (शिवदास गाडण)।
आमेर दुर्ग (Amer Fort)	जयपुर (चील का टीला)	शीश महल (दर्पणों का जड़ाव), दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, केसर क्यारी (मावठा झील), शीला देवी मंदिर (मानसिंह प्रथम द्वारा स्थापित)।	मुगल-राजपूत स्थापत्य का श्रेष्ठतम संगम। राजा मानसिंह प्रथम द्वारा 1592 में निर्माण प्रारंभ, सवाई जयसिंह द्वारा पूर्ण।
जैसलमेर / सोनारगढ़	जैसलमेर (त्रिकूट पहाड़ी)	पीले बलुआ पत्थरों से बिना चूने-गारे के इंटर्लॉकिंग से निर्मित। 99 बुर्ज। लक्ष्मीनाथ मंदिर, पार्श्वनाथ जैन मंदिर, जीनभद्र सूरी ग्रंथ भंडार।	ढाई साके (2.5 Sakas) हेतु प्रसिद्ध। 1155 ई. में राव जैसल द्वारा निर्मित। सत्यजीत रे की फिल्म 'सोनार केल्ला'।

3. राजस्थान के प्रमुख संग्रहालय एवं सांस्कृतिक संस्थाएं (Museums & Cultural Institutes)

3.1 राजस्थान के प्रमुख राजकीय एवं ऐतिहासिक संग्रहालय

संग्रहालय का नाम (Museum)	स्थान / जिला	स्थापना वर्ष व संस्थापक	प्रदर्शित दुर्लभ कलाकृतियां एवं परीक्षा उपयोगी तथ्य
अल्बर्ट हॉल संग्रहालय (Albert Hall)	रामनिवास बाग, जयपुर	1876 (शिलान्यास: प्रिंस अल्बर्ट) 1887 (उद्घाटन: एडवर्ड ब्रैडफोर्ड)	राजस्थान का सबसे प्राचीन राजकीय संग्रहालय । इंडो-सारसेनिक शैली (वास्तुकार: सर सैम्युअल स्विटन जैकब)। प्रमुख आकर्षण: मिस्र की 2300 वर्ष पुरानी 'तूतु' नामक ममी (Mummy) , फारसी कालीन, प्राचीन सिक्के।
सिटी पैलेस संग्रहालय (City Palace)	जयपुर (चंद्रमहल परिसर)	सवाई जयसिंह द्वितीय व वंशज	विश्व के सबसे बड़े चांदी के दो विशाल जल-पात्र (गंगाजली) (गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज - सवाई माधोसिंह द्वितीय इंग्लैंड ले गए थे), महारानी महल का शस्त्रागार।
मेहरानगढ़ संग्रहालय	जोधपुर दुर्ग	राव जोधा व मारवाड़ ट्रस्ट	शाही पालकियों का विशाल संग्रह (महाडोल पालकी), हौदे, ऐतिहासिक तोपें (किलकिला, शंभूबाण, गजनी खां), राजस्थानी पगड़ियों की वीथिका।
गंगा गोल्डन जुबली संग्रहालय	बीकानेर	1937 (महाराजा गंगासिंह)	लॉर्ड लिनलिथगो द्वारा उद्घाटन। गुप्तकालीन व कुषाणकालीन मृण्मूर्तियां (बादोपल व रंगमहल से प्राप्त), कैमल हाइड क्राफ्ट (उस्ता कला), राजस्थानी अस्त्र-शस्त्र।
बागोर की हवेली संग्रहालय	पिछोला झील, उदयपुर	अमरचंद बड़वा (मेवाड़ प्रधानमंत्री)	पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (WZCC) का मुख्यालय। यहां विश्व की सबसे बड़ी पगड़ी (World's Largest Turban) और कठपुतली संग्रहालय स्थित है।
राजपूताना संग्रहालय (मैगजीन दुर्ग)	अकबर का किला, अजमेर	1908 (ब्रिटिश काल)	मुगल बादशाह जहांगीर और सर थॉमस रो की 1616 में ऐतिहासिक मुलाकात का स्थल। सिरौही, हर्षनाथ और किराडू से प्राप्त दुर्लभ मध्यकालीन मूर्तियां।

3.2 राजस्थान की प्रमुख सांस्कृतिक एवं साहित्य अकादमी संस्थाएं

संस्था का नाम	मुख्यालय	स्थापना वर्ष	मासिक / त्रैमासिक पत्रिका (Magazine) व सर्वोच्च पुरस्कार
राजस्थान साहित्य अकादमी	उदयपुर	1958	मासिक पत्रिका: ' मधुमती ' सर्वोच्च पुरस्कार: ' मीरां पुरस्कार '।
राजस्थान संगीत नाटक अकादमी	जोधपुर	1957	कला, संगीत, नाटक व लोक कलाकारों का राज्यस्तरीय संवर्धन।
राजस्थान ललित कला अकादमी	जयपुर	1957	चित्रकला, मूर्तिकला व दृश्य कला संवर्धन हेतु नोडल संस्था।
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी	जयपुर	1986	त्रैमासिक पत्रिका: ' ब्रज-शतदल ' सर्वोच्च पुरस्कार: 'राधाकृष्ण पुरस्कार'।
राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी	जयपुर	1969	विश्वविद्यालय व प्रतियोगी परीक्षाओं की मानक संदर्भ पुस्तकों का प्रकाशन।
राजस्थानी भाषा, साहित्य व संस्कृति अकादमी	बीकानेर	1983	मासिक पत्रिका: ' जागती जोत ' सर्वोच्च पुरस्कार: ' सूर्यमल मीसण शिखर पुरस्कार '।
मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी-फारसी शोध संस्थान	टोंक	1978	दुर्लभ अरबी, फारसी पांडुलिपियां (औरंगजेब द्वारा लिखित 'कुरान-ए-मजीद' की प्रति सुरक्षित)।
जवाहर कला केंद्र (JKK)	जयपुर	1993	वास्तुकार: चार्ल्स कोरिया (नवग्रह मंडल की संकल्पना पर आधारित)। राजस्थान का प्रमुख सांस्कृतिक केंद्र।
पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (WZCC)	उदयपुर (बागोर की हवेली)	1986	राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा व केंद्रशासित प्रदेशों की कला-संस्कृति संगम। अध्यक्ष: राज्यपाल।
रूपायन संस्थान	बोरुंदा (जोधपुर)	1960	संस्थापक: कोमल कोठारी एवं विजयदान देथा ('बिज्जी') । लोकगीत, लोकसंगीत एवं लोकसंस्कृति का संरक्षण।

4. राजस्थान की प्रमुख हवेलियां, छतरियां एवं बावड़ियां (Architectural Gems)

4.1 राजस्थान की प्रसिद्ध हवेलियां (The Splendid Havelis)

Key Havelis across Districts:

- **Jaisalmer Havelis (Stone filigree carving / जालीदार नक्काशी):**
 - **Patwon ki Haveli (पटवों की हवेली):** Built by Guman Chand Patwa (1805 CE) for his 5 sons. Complex of 5 interconnected five-storey mansions. World-renowned for intricate stone latticework (Jharokhas).
 - **Salim Singh ki Haveli (सालिम सिंह की हवेली):** Built by PM Salim Singh in 1815. Known as 'Jahaz Mahal' or 'Moti Mahal' due to its ship-like silhouette; has 9 storeys (upper two wooden storeys were dismantled).
 - **Nathmal ki Haveli (नथमल की हवेली):** Built in 1885 by PM Nathmal. Constructed by two architect brothers, Hathi and Lalu, working independently on left and right wings with remarkable symmetry. Features carved stone elephants outside.
- **Shekhawati Havelis (Fresco Open Art Gallery):**
 - **Nawalgarh (नवलगढ़):** Known as the 'Golden City of Shekhawati'. Poddar Haveli, Bhagton ki Haveli, Chokhani Haveli.
 - **Mandawa (मंडावा):** Saraf Haveli, Ladia Haveli, Castle Mandawa.
 - **Ramgarh Shekhawati:** Tarachand Rungta Haveli, Khemka Haveli. Known as the town with the maximum number of havelis.
- **Bikaner & Jodhpur Havelis:** Rampuria Havelis in Bikaner (dulmera red sandstone, European-Mughal-Rajput fusion); Bade Mian ki Haveli and Pokaran Haveli in Jodhpur.

जिलों के अनुसार राजस्थान की प्रमुख हवेलियां:

- **जैसलमेर की हवेलियां (पत्थरों की बारीक जालीदार नक्काशी):**
 - पटवों की हवेली: 1805 में सेठ गुमानचंद बाफना (पटवा) ने अपने 5 बेटों के लिए बनवाई। यह 5 मंजिला 5 हवेलियों का भव्य समूह है। इसके बारीक झरोखे विश्वविख्यात हैं।
 - सालिम सिंह की हवेली: 1815 में प्रधानमंत्री सालिम सिंह द्वारा निर्मित। जहाज जैसी आकृति के कारण इसे 'जहाज महल' या 'मोती महल' कहते हैं। यह 9 मंजिला थी (ऊपर की लकड़ी की 2 मंजिलें बाद में हटा दी गई)।
 - नथमल की हवेली: 1885 में बनी। इसे दो वास्तुकार भाइयों **हाथी और लालू** ने स्वतंत्र रूप से बिना नक्शा देखे दाएं और बाएं हिस्से को बनाया, फिर भी दोनों में अद्भुत साम्यता है। प्रवेश द्वार पर पत्थरों के दो विशाल हाथी खड़े हैं।
- **शेखावाटी की हवेलियां (भित्तिचित्रों की ओपन आर्ट गैलरी):**
 - नवलगढ़ (झुंझुनू): 'शेखावाटी की स्वर्ण नगरी'। पोद्दार हवेली, भक्तों की हवेली, चौखानी हवेली।
 - मंडावा (झुंझुनू): सराफ हवेली, लाडिया हवेली, मंडावा कैसल।
 - रामगढ़ शेखावाटी (सीकर): ताराचंद रंगटा हवेली, खेमका हवेली। राजस्थान में सर्वाधिक हवेलियों वाला कस्बा।
- **बीकानेर व जोधपुर की हवेलियां:** बीकानेर की लाल पत्थरों से बनी **रामपुरिया हवेलियां** (मुगल-ब्रिटिश-राजपूत शैली); जोधपुर की बड़े मियां की हवेली, राखी हवेली व पोकरण हवेली।

4.2 ऐतिहासिक छतरियां एवं बावड़ियां (Cenotaphs & Stepwells)

स्मारक श्रेणी	नाम एवं खंभों की संख्या	स्थान / जिला	संबंधित शासक / ऐतिहासिक महत्व
छतरी (Cenotaph)	84 खंभों की छतरी	देवपुरा, बूंदी	राव राजा अनिरुद्ध सिंह द्वारा धाय भाई देवा की स्मृति में (1683 ई.) निर्मित। 3 मंजिला भव्य छतरी।

स्मारक श्रेणी	नाम एवं खंभों की संख्या	स्थान / जिला	संबंधित शासक / ऐतिहासिक महत्व
छतरी	80 खंभों की छतरी (मूसी महारानी)	अलवर	महाराजा विनयसिंह द्वारा बख्तावर सिंह व मूसी महारानी की स्मृति में। श्वेत संगमरमर व लाल पत्थर।
छतरी	32 खंभों की छतरी (न्याय की छतरी)	रणथंभौर दुर्ग	राणा हम्मीर देव ने अपने पिता जैत्रसिंह के 32 वर्षों के शासनकाल की याद में बनवाई।
छतरी	जसवंत थड़ा ('राजस्थान का ताजमहल')	जोधपुर (मेहरानगढ़ तलहटी)	महाराजा सरदार सिंह द्वारा पिता जसवंत सिंह द्वितीय की स्मृति में (1899) निर्मित। सफेद मकराना संगमरमर।
छतरी	बड़ा बाग की छतरियां	जैसलमेर	जैसलमेर के भाटी राजवंश के शासकों की शाही छतरियां।
छतरी	गेटोर की छतरियां	जयपुर (नाहरगढ़ तलहटी)	जयपुर के कछवाहा शासकों का शाही श्मशान घाट। सवाई जयसिंह द्वितीय की छतरी सबसे सुंदर।
बावड़ी (Stepwell)	चांद बावड़ी (Chand Baori)	आभानेरी, बांदीकुई (दौसा)	गुर्जर-प्रतिहार राजा निकुंभ (चांद) द्वारा 8वीं-9वीं सदी में निर्मित। 3500 सीढ़ियों वाली विश्व की सबसे गहरी व भूलभुलैया जैसी बावड़ी। पास में हर्षत माता मंदिर।
बावड़ी	रानीजी की बावड़ी ('बावड़ियों का सिरमौर')	बूंदी ('बावड़ियों का शहर')	1699 ई. में रानी नाथावत (राजा अनिरुद्ध सिंह की विधवा) द्वारा निर्मित। सुंदर तोरण द्वार व मूर्तियां।
बावड़ी	दूध बावड़ी	माउंट आबू (सिरोही)	अधर देवी (अर्बुदा माता) मंदिर की तलहटी में स्थित। मान्यता है कि इसका जल दूध जैसा दिखता था।
बावड़ी	बाटाड़ू का कुआं ('रेगिस्तान का जलमहल')	बायतु (बालोतरा/ बाड़मेर)	सफेद संगमरमर से निर्मित भव्य कलात्मक कुआं। रावल गुलाब सिंह द्वारा अकाल राहत कार्य में निर्मित।

5. राजस्थान के प्रमुख लोक देवता (Folk Deities of Rajasthan)

5.1 पंच पीर: गहन विश्लेषण (The Five Revered Pirs)

1. Baba Ramdevji (Runecha, Jaisalmer):

- **Identity & Incarnation:** Considered an incarnation of Lord Krishna (or Balarama by some traditions), born at Undu-Kashmir (Shiv Tehsil, Barmer) in the Tanwar Rajput clan to King Ajmalji and Queen Mainade.
- **Social Reform & Kamadiya Panth:** Pioneer of social equality who fiercely campaigned against untouchability. Founded the *Kamadiya Panth*. Composed the revered poetic collection 'Chaubis Baniya' (the only folk deity in Rajasthan who was an accomplished poet).
- **Sacred Emblems:** Symbolized by carved stone footprints (Paglye). His sacred white or five-colored flag is called *Neja*. Overnight devotional vigils are termed *Jamma*. His fair (Bhadrapada Shukla Dwitiya to Ekadashi) at Ramdevra is the 'Kumbh of Marwar', famous for the mesmerizing Terah Tali dance performed by Kamad women sitting down with 13 cymbals (Manjiras).

1. बाबा रामदेव जी (रुणेचा, जैसलमेर):

- **अवतार एवं जन्म:** भगवान श्रीकृष्ण के अवतार। इनका जन्म बाड़मेर जिले की शिव तहसील के **उण्डू-काश्मीर** गांव में तंवर वंशीय राजपूत ठाकुर अजमल जी और माता मैणादे के घर हुआ।
- **कामिड़िया पंथ एवं चौबीस बाणियां:** इन्होंने समाज में छुआछूत और भेदभाव मिटाने के लिए **कामिड़िया पंथ** चलाया। राजस्थान के एकमात्र लोक देवता जो कवि भी थे, इन्होंने '**चौबीस बाणियां**' नामक उपदेशात्मक ग्रंथ की रचना की।
- **प्रतीक एवं अनुष्ठान:** इनके प्रतीक चिह्न 'पगलिए' (चरण चिह्न) हैं। इनकी पचरंगी या सफेद ध्वजा को '**नेजा**' और रात्रि जागरण को '**जम्मा**' कहा जाता है। भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से एकादशी तक रुणेचा में लगने वाला मेला 'मारवाड़ का कुंभ' कहलाता है, जहाँ कामड़ जाति की महिलाएं बैठकर 13 मंजीरों के साथ प्रसिद्ध **तेरहताली नृत्य** करती हैं। मुस्लिम श्रद्धालु इन्हें 'रामसा पीर' के नाम से पूजते हैं।

2. Pabuji Rathore (Kolumand, Phalodi):

- **Divine Epithets:** Incarnation of Lakshmana, known as the '*Plague-protector deity*', '*Camel-protector deity*' (ऊंटों के देवता), and '*Gau-Rakshak*'.
- **Camel Tradition & Raikas:** Revered for introducing the first female camels (Sandhni) from Sindh to the arid Marwar plains. The camel-breeding Rebari (Raika) community venerates Pabuji as their prime guardian deity.
- **Pabuji's Phad & Mare:** Rode the legendary black mare *Kesar Kalmi* (gifted by Deval Charani). Sacrificed his life in 1276 CE at Dhenchu fighting Jindrav Khichi of Nagaur to rescue Deval Charani's cows. Pabuji ki Phad is the most celebrated scroll in Rajasthan, chanted by Nayak Bhopas using the stringed Ravanhattha instrument. His heroic deeds were compiled by Ashiya Modji in '*Pabu Prakash*'.

2. पाबूजी राठौड़ (कोलू मंड, फलोदी):

- **उपनाम व अवतार:** लक्ष्मण जी के अवतार। 'ऊंटों के देवता', 'प्लेग रक्षक देवता', और शरणागत रक्षक।
- **ऊंट एवं रेबारी जाति:** मारवाड़ में सबसे पहले ऊंट (सांड) लाने का ऐतिहासिक श्रेय पाबूजी को जाता है। ऊंट पालक रेबारी (राइका) जाति पाबूजी को अपना प्रमुख आराध्य देव मानती है। ऊंट के बीमार होने पर पाबूजी की तांती बांधी जाती है।
- **पाबूजी की पड़ एवं केसर कालमी:** इनकी प्रसिद्ध घोड़ी का नाम **केसर कालमी** था (जो देवल चारणी ने दी थी)। 1276 ई. में देवल चारणी की गायों को छुड़ाते हुए नागौर के जींदराव खींची के खिलाफ डेंचु गांव में वीरगति प्राप्त की। **पाबूजी की पड़** राजस्थान की सबसे लोकप्रिय पड़ है, जिसे नायक जाति के भोपे रावणहत्था वाद्ययंत्र के साथ बांचते हैं। आशिया मोड़जी ने 'पाबू प्रकाश' ग्रंथ लिखा।

3. Gogaji, Harbhuji & Mehaji Mangaliya:

- **Gogaji (Dadrewa, Churu & Gogamedi, Hanumangarh):** Supreme serpent deity (नागराज), son of Jewar Singh and Bachhal Devi. Fought Mahmud of Ghazni, who proclaimed him '*Jahar Pir*' (Living Saint). The entrance of Gogamedi temple bears the Islamic inscription 'Bismillah', constructed in mausoleum style by Firoz Shah Tughlaq and given its modern facade by Maharaja Ganga Singh.
- **Harbhuji Sankhla (Bengti, Phalodi):** Maternal cousin of Ramdevji. Guided Rao Jodha to reclaim Mandore and gifted him a magical dagger (Katar). Instead of an idol, his sacred wooden cart (छकड़ा गाड़ी), used to transport fodder for crippled cows, is worshipped at Bengti.
- **Mehaji Mangaliya (Bapini, Phalodi):** Patron deity of Mangaliya Rajputs. Favorite steed was *Kird Kabra*. Attained martyrdom fighting Ranangdev Bhati of Jaisalmer. Annual fair held on Krishna Janmashtami.

3. गोगाजी, हड़बूजी एवं मेहा जी मांगलिया:

- **गोगाजी (ददरेवा, चूरू व गोगामेड़ी, हनुमानगढ़):** नागों के देवता। महमूद गजनवी से बहादुरी से लड़े, जिसने इन्हें '**जाहर पीर**' (साक्षात् देवता) की उपाधि दी। ददरेवा (चूरू) को 'शीर्षमेड़ी' और गोगामेड़ी (हनुमानगढ़) को 'धुरमेड़ी' कहते हैं। गोगामेड़ी का निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने मकबरेनुमा करवाया और द्वार पर '**बिस्मिल्लाह**' लिखवाया; वर्तमान स्वरूप महाराजा गंगासिंह ने दिया।
- **हड़बूजी सांखला (बेंगटी, फलोदी):** रामदेव जी के मौसरे भाई। राव जोधा को मंडोर जीतने का आशीर्वाद और कटार भेंट की थी। इनके मंदिर में किसी मूर्ति की नहीं, बल्कि इनकी बैलगाड़ी (छकड़ा गाड़ी) की पूजा होती है, जिससे वे पंगु गायों के लिए घास लाते थे।
- **मेहा जी मांगलिया (बापिणी, फलोदी):** मांगलिया राजपूतों के इष्टदेव। प्रिय घोड़ा: **किरड़ काबरा**। जैसलमेर के राव राणगदेव भाटी से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। मेला: भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (कृष्ण जन्माष्टमी)।

5.2 वीर तेजाजी एवं देवनारायण जी (Tejaji & Devnarayanji)

Veer Tejaji & Lord Devnarayanji:

- **Veer Tejaji (Khadnal, Nagaur):** Born in a Nagavanshi Jat family to Taharji and Sugna Devi; husband of Pernalde. Sacrificed his life at Sursura (Ajmer) honoring his vow to snake deity Basak after protecting the cows of Lachha Gujar from Mer raiders. Veneration centers: Parbatsar (annual cattle fair on Bhadrpada Shukla Dashami), Sendariya (where serpent bit his tongue), Bhavanta, and Bansi Dugari. Known as '*Kala-Bala ke Devta*' and protector of agriculture.
- **Devnarayanji (Asind, Bhilwara):** Incarnation of Lord Vishnu, supreme folk deity of the Gurjar community. Son of Sawai Bhoj (Baghrawat clan). Devnarayanji's Phad is the longest, oldest, and most illustrated Phad in Rajasthan, recited by Gurjar Bhopas with the Jantar musical instrument. In 1992, India Post issued a

postage stamp on this Phad, and in 2011 on Devnarayanji himself. Worshipped with offerings of neem leaves and brick stones.

वीर तेजाजी एवं भगवान देवनारायण जी:

- **वीर तेजाजी (खरनाल, नागौर):** नागवंशीय जाट कुल में जन्म (पिता ताहड़ जी, माता सुगना देवी, पत्नी पेमलदे)। लाखों गूजरी की गायों को मेरों से छुड़ाने के बाद नाग देवता (बाषक) को दिए वचन को निभाने हेतु सुरसुरा (अजमेर) में जीभ पर सर्पदंश सहकर शहादत दी। प्रमुख स्थल: परबतसर (भाद्रपद शुक्ल दशमी को विशाल पशु मेला), सेंदरिया, भावंता, व बांसी दुगारी (बूंदी)। इन्हें '**काला-बाला के देवता**' और कृषि उपकारक देवता कहा जाता है।
- **देवनारायण जी (आसींद, भीलवाड़ा):** भगवान विष्णु के अवतार, गुर्जर समाज के प्रमुख आराध्य देव। सवाई भोज के पुत्र (बगड़ावत वंश)। **देवनारायण जी की पड़** राजस्थान की सबसे लंबी, सबसे प्राचीन और सर्वाधिक चित्रों वाली पड़ है, जिसे **जंतर** वाद्ययंत्र के साथ बांचा जाता है। इस पड़ पर 1992 में और देवनारायण जी पर 2011 में भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया। मंदिर में मूर्ति की जगह ईंटों की पूजा नीम की पत्तियों से होती है।

6. राजस्थान की प्रमुख लोक देवियां (Folk Goddesses of Rajasthan)

लोक देवी (Goddess)	प्रमुख मंदिर व स्थान	कुलदेवी / आराध्य	विशिष्ट धार्मिक मान्यताएं एवं परीक्षा उपयोगी साक्ष्य
करणी माता (Karni Mata)	देशनोक (बीकानेर)	बीकानेर के राठौड़ वंश व चारणों की कुलदेवी	' चूहों वाली देवी '. मंदिर में हजारों चूहे निर्भय घूमते हैं; सफेद चूहों को ' काबा ' कहते हैं जिनके दर्शन से मनोकामना पूरी होती है। मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता के हाथों रखी गई थी। प्रतीक: चील (सफेद चील)।
जीण माता (Jeen Mata)	रेवासा (सीकर) - काजल शिखर	चौहान वंश की आराध्य देवी	भाई हर्ष के साथ तपस्या की। राजस्थान में लोक देवियों में सबसे लंबा लोकगीत (चिरजा) जीण माता का है। मुगल बादशाह औरंगजेब ने आक्रमण किया तो भंवरो (मधुमक्खियों) की सेना ने मुगलों को खदेड़ दिया था; औरंगजेब ने यहां अखंड दीपक हेतु तेल भेजने का फरमान जारी किया था।
कैला देवी (Kaila Devi)	त्रिकूट पर्वत, करौली (कालीसिल नदी)	करौली के यदुवंशी (जादौन) वंश की कुलदेवी	अंजनी माता व कैला देवी का स्वरूप। चैत्र नवरात्र में विशाल ' लक्खी मेला ' लगता है। इनके भक्त प्रसिद्ध ' लांगुरिया ' गीत गाते हैं और लांगुरिया नृत्य करते हैं। मंदिर के सामने भक्त बोहरा की छतरी है।
शीला देवी (Shila Devi)	आमेर दुर्ग (जयपुर)	कछवाहा राजवंश की इष्टदेवी	राजा मानसिंह प्रथम 1604 ई. में बंगाल के राजा केदार को पराजित कर जसोर से यह काले संगमरमर की मूर्ति लाए थे। देवी को ढाई प्याला मदिरा चढ़ाने की ऐतिहासिक परंपरा रही है।
शीतला माता (Sheetla Mata)	चाकसू (जयपुर) - शील की डूंगरी	बच्चों की संरक्षिका देवी (चेचक निवारक)	सवाई माधोसिंह द्वारा मंदिर निर्मित। एकमात्र लोक देवी जिनकी खंडित प्रतिमा की पूजा होती है। वाहन: गधा, पुजारी: कुम्हार। चैत्र कृष्ण अष्टमी (शीतलाष्टमी) को बासी भोजन (बास्योड़ा) का भोग लगता है।
त्रिपुरा सुंदरी (तूरताई माता)	तलवाड़ा (बांसवाड़ा)	पांचाल समाज की कुलदेवी	अठारह भुजाओं वाली काले पाषाण की भव्य प्रतिमा। शक्तिपीठ। सिंह, मयूर और कमल पर आसीन तीन रूपों (बालिका, तरुणी, प्रौढ़ा) में दर्शन।

7. प्रमुख संत एवं धार्मिक संप्रदाय (Saints & Religious Sects)

Prominent Saints & Reformist Sects of Rajasthan:

- **Saint Dadu Dayal ('Kabir of Rajasthan'):** Founded the *Dadu Panth* (1574 CE, headquarters at Naraina, Jaipur). Preached in simple Dhundhari (Sadukkadi) dialect compiled in '*Dadu Vani*' and '*Dadu Ra Duha*'. Met Akbar at Fatehpur Sikri in 1585. Satsang place is called *Alakh Dariba*. The dead are neither cremated nor buried, but offered to animals and birds in forest (Dadu Dayal's body was placed in Bhairana hill cave).
- **Jambhoji & Bishnoi Sect (29 Rules):** Born at Pipasar (Nagaur) on Krishna Janmashtami (1451 CE). Formulated the 29 environmental principles (Bish-noi: 20+9) at Samrathal Dhora (Bikaner) in 1485.

Prohibited felling of green trees (especially Khejri) and killing of animals. Main shrine: Mukam (Talwa, Bikaner). In 1730 CE, 363 Bishnois led by Amrita Devi sacrificed their lives in Khejarli (Jodhpur) to protect trees under Maharaja Abhai Singh.

- **Jasmathji & Jasnathi Sect (36 Rules):** Born at Katriyasar (Bikaner). Attained enlightenment at age 12; contemporary of Sikandar Lodi (who granted land at Katriyasar). Prescribed 36 sacred rules. Adherents wear black wool thread around the neck and perform the ecstatic Fire Dance (Agni Nritya) walking on burning charcoal shouting 'Fateh-Fateh'.
- **Ramsnehi Sect (Four Centers):** Monotheistic Ram-bhakti founded by Sant Ramcharanji. Four historic branches:
 - **Shahpura (Bhilwara) - Principal Seat:** Founded by Sant Ramcharanji. Famous for the vibrant Phuldol Fair (Phalguna Krishna Pratipada to Panchami).
 - **Ren (Nagaur):** Founded by Sant Daryavji.
 - **Sinthal (Bikaner):** Founded by Sant Hariramdasji (authored 'Nishan').
 - **Khedapa (Jodhpur):** Founded by Sant Ramdasji.

प्रमुख संत एवं सुधारवादी संप्रदाय:

- **संत दादू दयाल ('राजस्थान का कबीर'):** 1574 में दादू पंथ की स्थापना की (प्रधान पीठ: नराणा/नारायणा, जयपुर)। इन्होंने सरल ढूंढाड़ी (सधुक्कड़ी) में उपदेश दिए जो 'दादू वाणी' और 'दादू रा दूहा' में संकलित हैं। 1585 में फतेहपुर सीकरी में अकबर से मिले। सत्संग स्थल को 'अलख दरीबा' कहते हैं। दादू पंथ में शव को जलाया या दफनाया नहीं जाता, बल्कि पशु-पक्षियों के भोजन हेतु जंगल (भैराणा पहाड़ी) में छोड़ दिया जाता है।
- **संत जाम्भोजी एवं विश्वोई संप्रदाय (29 नियम):** 1451 ई. में पीपासर (नागौर) में जन्म। 1485 में समराथल धोरा (बीकानेर) में 29 नियम (20+9 = विश्वोई) देकर संप्रदाय की स्थापना की। हरे वृक्षों (विशेषकर खेजड़ी) को काटने और वन्यजीवों (विशेषकर हिरण) की रक्षा का संदेश दिया। प्रमुख तीर्थ: मुकाम (बीकानेर)। 1730 ई. में जोधपुर के खेजड़ली गांव में अमृता देवी विश्वोई के नेतृत्व में 363 लोगों ने पेड़ों को बचाने हेतु बलिदान दिया था।
- **संत जसनाथ जी एवं जसनाथी संप्रदाय (36 नियम):** कतरियासर (बीकानेर) में जन्म। मात्र 24 वर्ष की अल्पायु में जीवित समाधि ली। सुल्तान सिकंदर लोदी ने कतरियासर में भूमि भेंट की थी। इन्होंने अनुयायियों हेतु 36 नियम बनाए। गले में काली ऊन का धागा पहनते हैं और जाल वृक्ष व मोर पंख को पवित्र मानते हैं। इनके सिद्ध पुरुष धधकते अंगारों पर 'फतेह-फतेह' बोलते हुए अग्नि नृत्य करते हैं।
- **रामस्नेही संप्रदाय की 4 प्रमुख शाखाएं:** निर्गुण राम-भक्ति का संप्रदाय।
 - शाहपुरा शाखा (भीलवाड़ा - प्रधान पीठ): संस्थापक: **संत रामचरण जी**। चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से पंचमी तक यहाँ का प्रसिद्ध 'फूलडोल महोत्सव' लगता है।
 - रेण शाखा (नागौर): संस्थापक: **संत दरियाव जी**।
 - सींथल शाखा (बीकानेर): संस्थापक: **संत हरिरामदास जी** (ग्रंथ: 'निशानी')।
 - खेड़ापा शाखा (जोधपुर): संस्थापक: **संत रामदास जी**।